ऊर्जा नीति और जलवायु परिवर्तन एक दूसरे से जुड़े हैं: कलाम

मुम्बई। पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ने शुक्रवार को कहा कि जलवायु परिवर्तन ऊर्जा नीति का अभिन्न हिस्सा है और ऊर्जा आत्मनिर्भरता इससे करीबी से जुड़ी है।

कलाम ने वैदिक विज्ञान अध्ययन संस्थान द्वारा आयोजित 'सततता- एक वास्तविकता' नामक सम्मेलन एवं प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए यह बात कही। उन्होंने कहा, 'भारत अक्षय ऊर्जा (सौर, पवन), परमाणु और जैव ऊर्जा के मिश्रित इस्तेमाल से ऊर्जा में आत्मनिर्भरता हासिल कर सकता है। उन्होंने कहा कि बड़ी मात्रा में कार्बन डाईऑक्साइड की मात्रा कम करने के लिए देश को 2011-12 तक तेल के आयात में काफी कमी कर देनी चाहिए। उन्होंने कहा कि इथनोल के मिश्रण तथा पानी के साथ डीजल मिलाकर तेल का आयात 20 प्रतिशत कम किया जा सकता है। कलाम ने जैव ईंधन के लाभ के बारे में भी बताया। उन्होंने बताया कि छत्तीसगढ़ और इलाहाबाद में कई एकड़ में जट्रोफा के पौधे लगाए गए हैं, जो न केवल जैव ईंधन का स्रोत हैं, बल्कि मिट्टी के क्षरण को भी रोकते हैं और केले की खेती में गर्मी से बचाव भी करते हैं। कलाम ने कहा कि करीब 10000 किसान जट्रोफा की खेती से जुड़े हैं और इससे बंजर जमीन की मिट्टी अच्छी हुई है, मिट्टी के पानी सोखने की क्षमता बढ़ी है और पानी का स्तर बढ़ा है। कुछ और पर्यावरण अनुकूल समाधान बताते हुए उन्होंने अस्सी के दशक के शुरू में चांदीपुर के मरूस्थल में 100000 पेड़ लगाकर तथा कृत्रिम तालाब बनाकर परिवर्तन लाने का उदाहरण पेश किया।

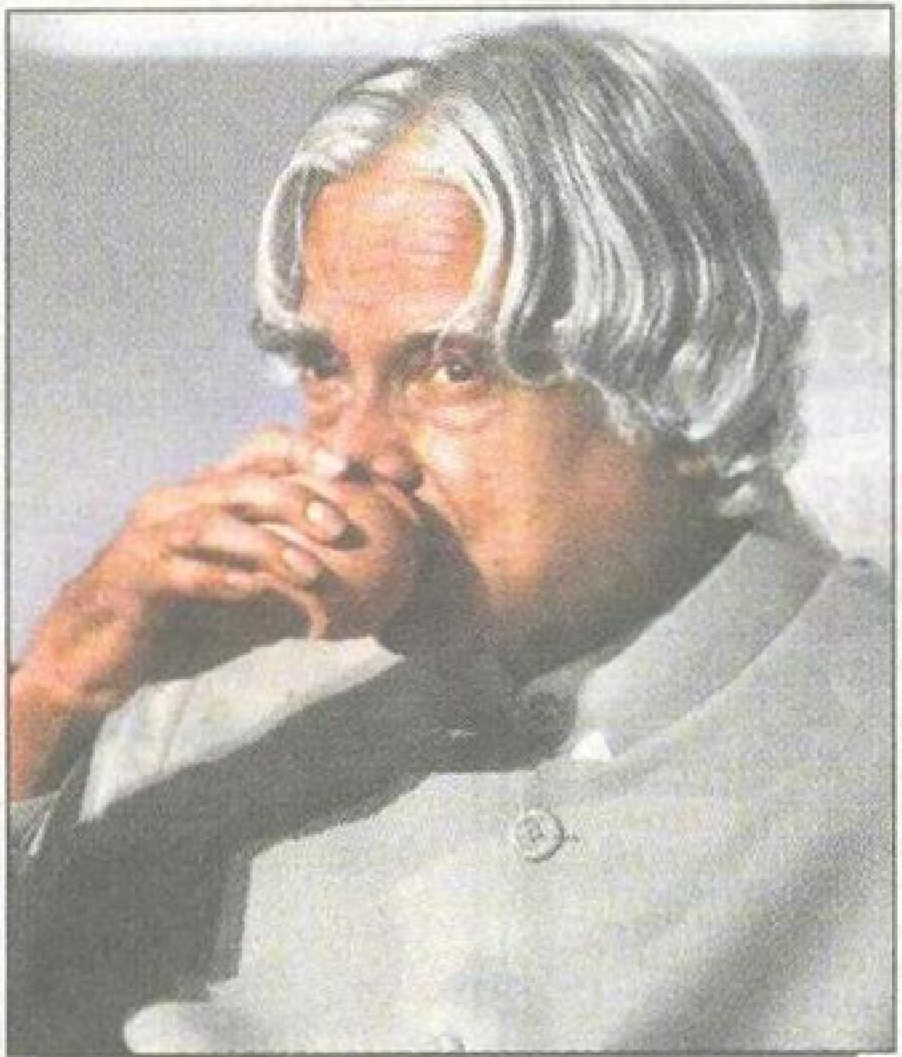

सम्मेलन के बाद गुरुवार को चाय की चुस्की लेते कलाम।

उन्होंने कहा कि चांदीपुर एक संरक्षित क्षेत्र है। 'बिना शिकार के खतरे के समूचे तट में कछुए शांतिपूर्वक प्रजनन कर सकते हैं।' पूर्व राष्ट्रपति ने सम्मेलन में मौजूद छात्रों से कहा कि सततता को एक मिशन मानकर हर गांव को हरित बनाना चाहिये।

(भाषा)